नटवर-निकुञ्ज-माला का १म पुष्प ।

# गुलाल

भाल, गाल यों लाल बना देवैं 'गुलाल' कौ डाल;

लाल लाल लखि पड़ैं लाल सब, ह्वै कै लाले लाल ।

लेखक—

श्री ललितकुमारसिंह 'नटवर'

द्वितीय संस्करण ] बसन्तपञ्चमी १९८५ [ मूल्य ।)